राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

MARKING SCHEME

CERTIFICATE IN PERFORMING ARTS (C.P.A.)

(HINDUSTANI CLASSICAL MUSIC)-VOCAL / INSTRUMENTAL

(NON-PERCUSSION)

ONE YEAR CERTIFICATE COURSE

सत्र 2026–27 नियमित / स्वाध्यायी

PAPER	SUBJECT- VOCAL/INSTRUMENTAL (NON PERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory – Music Theory	100	33
2	PRACTICAL– Demonstration & viva	100	33
	GRAND TOTAL	200	66

सर्टिफिकेट / डिप्लोमा / एडवांस डिप्लोमा कोर्स गायन एवं स्वर वाद्य
सत्र 2027–28 नियमित / स्वाध्यायी

Certificate in Performing Arts (C.P.A.)

(Hindustani Classical Music)-Vocal/Instrumental

(Non-Percussion)

One Year Certificate Course

सैद्धांतिक–प्रथम प्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक :– 100**

न्यूनतम :– 33

1. संगीत, नाद, लय, श्रुति, स्वर, शुद्ध, विकृत, चल, अचल, सप्तक, मंद्र, मध्य, तार, बाईस श्रुतियों में वर्तमान सप्तक की स्वर स्थापना, स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग की परिभाषा।
2. ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, चतुरंग, लक्षणगीत, स्वरमालिका, सरगम, भजन, मसीतखानी रजाखानी का विस्तृत परिचय।
3. गायन के परीक्षार्थियों के लिये तानपुरा अथवा हारमोनियम एवं वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये अपने वाद्य का सामान्य परिचय तथा उनके विभिन्न अवयवों का सचित्र ज्ञान।
4. गायक अथवा वादक के गुण–दोषों का अध्ययन।
5. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों का विस्तृत शास्त्रीय परिचय। यमन, भैरव, खमाज, काफी एवं भूपाली।
6. पाठ्यक्रम के निर्धारित तालों की ठाह, दुगुन लिखने का अभ्यास– त्रिताल, एकताल, चौताल, झपताल, दादरा एवं कहरवा।
7. पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर अथवा पं. विष्णु नारायण भातखण्डे का जीवन परिचय एवं संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान।
8. सितार वाद्य पर दो से लेकर आठ स्वरों के अलंकार का अभ्यास

Certificate in Performing Arts (C.P.A.)

(Hindustani Classical Music)-Vocal/Instrumental

(Non-Percussion)

One Year Certificate Course

प्रायोगिकः—प्रदर्शन एवं मौखिक

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक :— 100

न्यूनतम :— 33

1. पाठ्यक्रम के निर्धारित राग :— यमन, भैरव, खमाज, काफी एवं भूपाली।
2. कल्याण व भैरव थाटों में दस—दस अलंकारों का गायन/वादन।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित सभी रागों में 2 बड़े ख्याल अथवा विलम्बित रचना का आलाप, तानों सहित प्रदर्शन।
4. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में स्वरमालिका (सरगम), लक्षणगीत, छोटा ख्याल अथवा द्रुत रचना का आलाप, तानों सहित प्रदर्शन।
5. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में से एक ध्रुपद (दुगनु सहित), एक तराना अथवा भजन की प्रस्तुति। वाद्य के विद्यार्थियों के लिये द्रुत रचना का प्रदर्शन।
6. त्रिताल, एकताल, चौताल, झपताल, दादरा, कहरवा तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन व दुगुन का अभ्यास।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 1 से 3 — पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका — श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 1 से 2 — श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद — श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी — श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. संगीत शास्त्र — श्री एम. बी. मराठे
7. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 — श्री रामाश्रय झा